फारसी नहीं ठोकने दी।

रावेल ने अपनी यात्रा के माध्यम से यह समझाना चाहा है कि बांग्लादेश इस पृथ्वी का भले ही एक छोटा सा देश हो लेकिन उसके संकल्प, उसकी जिजीविषा कई बड़े राष्ट्रों से भी बड़ी है जिसने राष्ट्रसंघ में अपनी मातृभाषा संघर्षों की कुर्बानियों को स्थापित कर विश्वमंच पर भाषा दिवस की बुनियाद रखी। बांग्लादेश विश्व के उन छोटे-बड़े 48 मुस्लिम राष्ट्रों में अद्भुत उदारराष्ट्र है उसका राष्ट्रगीत एक हिंदू ने लिखा है। अपने प्रिय (मुसलिम) कवि नजरुल को शायद इसलिए इस पद से वंचित रखा कि वे अरबी, फारसी और उर्दू के भी जानकार थे।

'मेरी बांग्लादेश यात्रा' पढ़ते हुए मनमोहन ठाकौर की 1985 में प्रकाशित पुस्तक 'एक नास्तिक की तीर्थयात्रा' की याद हो गई जिसमें उन्होंने अमरनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री, गोमुख आदितीर्थ स्थलों का बड़े ही रोचक ढंग से उल्लेख किया है। उसी पुस्तक में एक अध्याय एक यात्रा आदमी से आदमी तक भी है। रावेल के इस सफरनामा में ऐसा कोई शीर्षक तो नहीं है लेकिन अपनी यात्रा के दौरान जरूर उन्होंने एक आदमी द्वारा आदमी की यात्रा को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है। इन्हीं प्रयासों की सिद्धि के लिए कलाकार रायजुल इस्लाम असद, मारेफिन सिद्दीकी, बदरुद्दीन उमर, नादिया इस्लाम आदि लेखक बुद्धिजीवियों से मिलना रावेल की यात्रा का उद्देश्य समझा जा सकता है।

दरअसल रावेल की यह पुस्तक एक तीर्थ यात्रा, मनुष्यता और संस्कृति को स्थापित करने हेतु यात्रा ही है। इस यात्रा में लेखक ने कई संस्कृतियों को देखा, समझा और पाठकों तक अपनी उस समझ को साझा करने की चेष्टा भी की है। हम सिख धर्म की बहुत सी बातों से अनभिज्ञ हैं जो इस पुस्तक से जान सकते हैं। सिख धर्म की उदारता और मुगलों की बर्बरता को भी देखा जा सकता है मगर उस क्रूरता में भी एक विनम्र, विनीत, सूफीवादी विचारों से ओतप्रोत एक धर्म का प्रादुर्भाव हम देखते हैं जो मुगलों के इतिहास का एक चमत्कारिक अध्याय है।

सिख धर्म का आधार सूफीवाद के सिद्धांत पर है। सूफिज्म सिखधर्म की रुहानी शक्ति है। गुरुग्रंथ दुनिया का शायद पहला अद्भुत धार्मिक ग्रंथ है जिसमें अपने समकालीन प्रायः सभी सूफी कवियों के सत वचनों को अपने पावन पृष्ठों पर अंकित कर सम्मान देकर दुनिया के धर्मों को उदारता की सीख दी गई है। यह नफरत को मात

हम सिख धर्म की बहुत सी बातों से अनभिज्ञ हैं जो इस पुस्तक से जान सकते हैं। सिख धर्म की उदारता और मुगलों की बर्बरता को भी देखा जा सकता है मगर उस क्रूरता में भी एक विनम्र, विनीत, सूफीवादी विचारों से ओतप्रोत एक धर्म का प्रादुर्भाव हम देखते हैं जो मुगलों के इतिहास का एक चमत्कारिक अध्याय है। सिख धर्म का आधार सूफीवाद के सिद्धांत पर है। सूफिज्म सिखधर्म की रुहानी शक्ति है। गुरुग्रंथ दुनिया का शायद पहला अद्भुत धार्मिक ग्रंथ है जिसमें अपने समकालीन प्राय: सभी सूफी कवियों के सत वचनों को अपने पावन पृष्ठों पर अंकित कर सम्मान देकर दुनिया के धर्मों को उदारता की सीख दी गई है।

देने का सबसे उत्तम साधन था नानक देव का। यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि इस्लाम का सूफीवाद सिक्ख धर्म ने अपनाकर मुगलों की क्रूरता को मात दे दी और सूफीवाद से खाली इस्लाम दुनिया की नजरों में आज उपेक्षित और नफरत का कारण बना हुआ है।

रावेल ने अपनी पुस्तक के माध्यम से एक और समन्वय की बात रखने की कोशिश की है। वे बताते हैं कि इस्लाम की भांति पांच वक्त की नमाज के तर्ज पर सिक्खों में भी पांच वाणियां प्रचलन में है जिन्हें समय-समय पर जपने(पढ़ने) का आदेश है। पाँच तख्त अर्थात धाम अकाल तख्त (अमृतसर), पटनासाहिब (बिहार), श्री केशगढ़ साहिब (आनंदपुर पंजाब), श्रीहजूर साहिब (नांदेड़ महाराष्ट्र) और श्रीदमदमा साहिब (भटिंडा पंजाब) है। इसी प्रकार पांच ककार केश, कंघा, कड़ा, कच्छा, कृपाण है। उसी के साथ यह भी जोड़ दिया जाए कि इस्लाम में अंतिम पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब की भांति दशम गुरु गोविंद सिंह ने भी यह घोषणा की कि और कोई गुरु नहीं होगा.... मैं अंतिम हूं.... गुरु ग्रंथ साहिब, मेरे बाद मार्गदर्शक होंगे। सब सिक्खन को हुक्म है गुरु मान्यो ग्रंथ।

इस पुस्तक से जहां बांग्लादेश की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक तथा सांस्कृतिक जानकारी मिलती है वहीं हमें सिख धर्म की बांग्लादेश में स्थापना, विकास और दशा-दिशा का भी पता चलता है। हमें पता चलता है कि बांग्लादेश में 'सिखवार्ता' का एक वार्षिक अंक भी प्रकाशित किया जाता है जिसमें उर्दू छोड़कर गुरुमुखी, बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी भाषा में भी लेखादि होते हैं। हमें जानकारी मिलती है कि गुरुनानक देवजी की चरण पादुका वहां रखी हुई है। इसके अलावा नानकदेव जी कलकत्ता भी आए थे और कई सप्ताह यहां प्रवास में रहे। जहां वे ठहरे और संत समागम किया, आज वहां बड़ा गुरुद्वारा स्थापित है और बड़ा बाजार गुरुद्वारा के नाम से विख्यात है।

यह सर्वविदित है कि बांग्लादेश का पाकिस्तान से टूटना भाषा की ज्यादती थी। वह भाषा जिसे वह अपने ऊपर थोपने से इनकार कर रहे थे और वहीं से भाषा संग्राम शुरू हुआ। लेखक ने बांग्लादेश के लेखकों से मुलाकात कर और उस समय के क्रांतिकारी कवियों की कविताओं को पुस्तक में देकर भाषा आंदोलन की पाठक को जानकारी दी है।

इस पुस्तक में हम पाते हैं कि किस तरह लेखक सिख धर्म से संबंधित स्थानों, वस्तुओं की खोज में कष्ट उठाकर उन स्थानों तक पहुंचकर उसकी तह में